श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी

Translations based on Prof. Sahib Singh's Punjabi Teeka
Edited by: Dr. Kulbir Singh Thind, MD

Page 219

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
हे संत जनो! मन का अहंकार त्याग दो।

कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥
काम तथा क्रोध भी बुरे मनुष्य की संगति जैसे हैं, इनसे दिन-रात दूर रहो ॥१॥ विराम॥

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
(हे संत जनो!) जो पुरुष सुख तथा दुःख दोनों को एक समान जानता है, तथा जो मान तथा अपमान दोनों को एक समान जानता है। (उसे इसकी परवाह नहीं कि कोई उसका सम्मान करता है या अनादर करता है),

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥
तथा जो मनुष्य सुख-दुःख दोनों से विरक्त रहता है (सुख के समय अभिमानी नहीं होता तथा दुःख के समय भयभीत नहीं होता) उसने संसार में जीवन का रहस्य समझ लिया है ॥१॥

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
(हे संत जनो!) उस मनुष्य ने सत्य पा लिया है) जो न तो किसी की खुशामद करता है, न किसी की निंदा करता है, तथा जो सदैव उस आध्यात्मिक अवस्था की खोज करता है, जहाँ कोई भी वासना नहीं छू सकती।

जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥
(परन्तु) हे नानक! यह (जीवन-)खेल कठिन है। कोई अनोखा ही गुरु की शरण में जाकर इसे समझ पाता है ॥२॥१॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो रचना राम बनाई ॥
हे संतों! भगवान ने (इस संसार की अद्भुत) रचना रची है,

इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
(कि) एक मनुष्य मरता है (किन्तु) दूसरा मनुष्य (उसे मरता देखकर भी) अपने को अमर समझता है। यह एक अद्भुत दृश्य है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥१॥ विराम॥

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥
(हे संत जनो) मनुष्य काम, क्रोध तथा मोह के वश में रहता है तथा ईश्वर के अस्तित्व को भूल जाता है।

झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥
यह शरीर सदैव रहने वाला नहीं है, परन्तु मनुष्य इसे सदैव रहने वाला मानता है, जैसे रात्रि में (सोते समय) स्वप्न आता है, तथा निद्रा की अवस्था में मनुष्य उस स्वप्न को वास्तविक घटना मानता है ॥१॥

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
(हे संत जनो!) जैसे बादल की छाया (सदा एक स्थान पर नहीं रह सकती, उसी प्रकार) जो कुछ दिखाई देता है, वह (अपने समय पर) नष्ट हो जाता है।

जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥
हे दास नानक! जिसने संसार को नाशवान माना है, वह (सदा रहने वाले) परमात्मा की शरण में रहता है ॥२॥२॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
(हे मनुष्य!) मनुष्य ईश्वर की महिमा को अपने मन में धारण करना नहीं जानता।

अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥
बताओ, जो व्यक्ति दिन-रात (माया के मोह में) मदमस्त रहता है, वह भगवान का गुणगान कैसे कर सकता है? ॥१॥ विराम॥

पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥
(हे मनुष्य! माया के मोह से मदमस्त हुआ मनुष्य) पुत्र, मित्र, माया (आदि) के मोह से बंधा रहता है तथा इस प्रकार अपने को (मोह के बंधनों में) बाँधे रखता है।

म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥
(माया से ग्रस्त मनुष्य यह नहीं समझता कि) यह संसार एक मृग-तृष्णा के समान है (जैसे हिरण मृग-तृष्णा को देखकर उसकी ओर दौड़ता है तथा भटकते-भटकते मर जाता है, वैसे ही मनुष्य भी इस संसार को देखकर उसकी ओर दौड़ता रहता है (तथा आध्यात्मिक मृत्यु को प्राप्त होता है) ॥१॥

भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥
मूर्ख व्यक्ति उस प्रभु को भूल जाता है, जो संसार के सुखों तथा आनंदों का स्वामी है तथा मोक्ष का दाता भी है।

जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥
हे दास नानक! कहो कि करोड़ों में कोई एक अनोखा ही ऐसा पुरुष होता है, जो (सांसारिक मोह से बचकर) भगवान की भक्ति को प्राप्त करता है ॥२॥३॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
हे संतों! यह मन वश में नहीं किया जा सकता,

चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥
(क्योंकि यह मन सदैव) अनेक प्रकार की क्रियाएं करने की वासना से ग्रस्त रहता है, इसलिए यह कभी दृढ़निश्चयी नहीं रहता ॥१॥ विराम॥

कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
(हे संत जनो!) इस के हृदय में अनियंत्रित क्रोध भी निवास करता है, जिसने (मनुष्य को सारी) विवेक बुद्धि को भुला दिया है।

रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥
(क्रोध) ने हर मनुष्य का सर्वोत्तम ज्ञान चुरा लिया है, कोई भी इससे निपट नहीं सकता ॥१॥

जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥
(इस मन को वश में करने का) योगी प्रयत्न करते-करते थक गए हैं, विद्वान पुरुष अपनी विद्या का बखान करते-करते थक गए हैं (न तो योग के साधन तथा न ही ज्ञान मन को वश में करने में समर्थ हैं)।

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥
हे दास नानक! जब प्रभु दयालु होते हैं, तो (इस मन को वश में करने के) सभी साधन उपलब्ध हो जाते हैं ॥२॥४॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
हे संतों! (सदैव) गोबिंद (प्रभु) का गुणगान करो!

मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥
यह अत्यन्त मूल्यवान मानव जन्म तुम्हें मिला है, इसे व्यर्थ क्यों गँवा रहे हो? ॥१॥ विराम॥

पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥
(हे संत जनो!) भगवान तो पापियों को भी पवित्र करने वाले हैं, वे दीन-दुखियों के सहायक हैं। तुम भी उनकी शरण जाओ।

गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥
जिनके ध्यान से (गज) हाथी का भय दूर हो गया, उनको तुम क्यों भूल रहे हो? ॥१॥

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
(हे संत जनो!) अहंकार तथा माया की आसक्ति को दूर करके अपने मन को भगवान के भजन में लगाओ!

नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥
नानक कहते हैं कि यह विकारों से मुक्ति का मार्ग है, लेकिन यह मार्ग तुम गुरु की शरण में जाकर ही पा सकोगे ॥२॥५॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥
हे माता! मेरा मन माया के मोह से भरे हुए इस दुनियावी जंगल में भटक गया है। मुझे कोई ऐसा गुरुमुख मिले जो मेरे इस भटके हुए मन को सद्बुद्धि दे सके।

Page 220

बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥
(यह भूला हुआ मन) वेद, पुराण तथा संतों के उपदेश सुनकर एक दिन भी भगवान का गुणगान नहीं करता ॥१॥ विराम॥

दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥
(हे मेरी माता! यह मन इतना भ्रमित है कि) यह मनुष्य शरीर, जो कि अत्यंत कठिनता से प्राप्त होता है, प्राप्त करके भी इस जन्म को व्यर्थ ही व्यतीत कर रहा है।

माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥
(हे माता! यह संसार) माया-रूपी वन की आसक्ति से भरा हुआ है (तथा मेरा मन) इस (वन) से प्रीति कर रहा है ॥१॥

अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥
(हे मेरी माता!) जो भगवान हर समय (प्रत्येक प्राणी के) अन्दर तथा बाहर निवास करते हैं, उनसे (मेरा यह मन) प्रेम नहीं करता।

नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥
हे नानक! (माया आसक्ति से भरे हुए दुनियावी जंगल से) उस व्यक्ति को उद्धारकर्ता समझो जिसके हृदय में भगवान निवास करते हैं ॥२॥६॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो राम सरनि बिसरामा ॥
हे संतों! भगवान की शरण में जाने से ही शांति मिलती है (विकारों में भटकने से)।

बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥
वेद-पुराण (प्राचीन धार्मिक पुस्तकें) पढ़ने का एकमात्र लाभ यह है (लाभ होना चाहिए) कि व्यक्ति को भगवान के नाम का ध्यान करते रहना चाहिए ॥१॥ विराम॥

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥
(हे संत जनो!) लोभ, माया से आसक्ति, स्वार्थ तथा इच्छाओं का उपभोग,

हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥
सुख न दुःख (इनमें से कोई भी नहीं) जिस पुरुष को नहीं छू सकता है, (जिस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता) वह मनुष्य भगवान का रूप है ॥१॥

सुरग नरक अम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
(हे संत जनो! वह मनुष्य भगवान का रूप है जिसे) स्वर्ग तथा नरक, अमृत तथा विष एक समान लगते हैं, जिसे सोना तथा तांबा एक समान लगते हैं,

उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥
जिसके हृदय में उसकी स्तुति तथा निंदा समान हैं (चाहे कोई उसकी स्तुति करें, कोई उस पर निंदा करें - उसके लिए वे दोनों समान हैं), जिसके हृदय में लोभ भी उसे प्रभावित नहीं कर सकता, आसक्ति भी उसे प्रभावित नहीं कर सकती ॥२॥

दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
(हे संत जनो!) उस व्यक्ति को भगवान से गहन रूप से जुड़ा हुआ समझो, जिसे न तो दुःख बांध सकता है तथा न ही सुख (अपने प्रभाव में)।

नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥
हे नानक! (कहो, हे संत जनो! लोभ, मोह, दुःख, सुख आदि से) उस मनुष्य को मोक्ष प्राप्त हुआ समझो, जो इस प्रकार का जीवन वाला है ॥३॥७॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
हे मेरे मन! तू कहाँ पागल हो रहा है (लोभ आदि में फँसकर)?

अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥
(अरे भाई!) जीवन दिन-रात घटता रहता है, परंतु मनुष्य यह बात नहीं समझता तथा लोभ में फंसकर आध्यात्मिक जीवन में कमजोर हो जाता है ॥१॥ विराम॥

जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
हे मेरे मन! तू जिस शरीर को अपना मान रहा है, तथा जिस घर की सुन्दरी स्त्री को अपना मान रहा है,

इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥
इनमें से कोई भी तुम्हारा (सदा का साथी) नहीं है, सोचो तथा देखो, विचार करके देखो ॥१॥

रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥
(हे मेरे मन!) जैसे जुआरी जुआ में अपनी बाजी हार जाता है, वैसे ही तू भी अपना अनमोल मानव जन्म खो रहा है, क्योंकि तूने ईश्वर से मिलने की स्थिति का मूल्यांकन नहीं किया है।

निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥
तू एक क्षण के लिए भी भगवान के चरणों से नहीं जुड़ता, तू अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा रहा है ॥२॥

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
नानक कहते हैं कि वह व्यक्ति सुखी जीवन जीता है जो भगवान का नाम जपता है, जो भगवान की स्तुति गाता है।

अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥
शेष संसार जो माया के मोह में फंसा रहता है (भयभीत रहता है, वह) उस आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाता, जहाँ कोई भय नहीं पहुँच सकता ॥३॥८॥

गउड़ी महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
हे असावधान मनुष्य! पापों से दूर रह!

दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥
(तथा इन पापों से बचने के लिए) ईश्वर की शरण लो, जो दीन-दुखियों पर दयालु है तथा सब भय दूर करने वाला है।

बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥
(हे असावधान मनुष्य!) उस ईश्वर का नाम अपने हृदय में रख, जिसका गुण वेद तथा पुराणों (आदि) में गाया गया है।

पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥
(हे अविवेकी मनुष्य! संसार को पापों से बचाकर पवित्र करने वाला एकमात्र भगवान का नाम है। उस नाम का ध्यान करके तू समस्त पापों को (अपने भीतर से) दूर कर! ॥१॥

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
(हे असावधान मनुष्य) तू यह मानव शरीर फिर कभी नहीं पा सकेगा (क्यों पाप करके इसे खो रहा है? यही समय है।) इन पापों से मुक्ति पाने के लिए कुछ उपचार कर।

नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥
नानक आपको दयालु ईश्वर के गुणगान गाकर संसार सागर से पार जाने को कहते हैं ॥२॥९॥२५१॥

Page 411

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु आसा महला ९ ॥
राग आसा में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
इस (मानव) मन की बुरी हालत किससे कहूँ (हर मनुष्य की यही हालत है),

लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥
लोभ में फँसा हुआ यह मन दसों दिशाओं में दौड़ता रहता है, धन-संचय की कामना इसे जकड़े रहती है ॥१॥ विराम॥

सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥
सुख पाने के लिए (यह मन) सब की खुशामद करता है (तथा इस प्रकार सुख की जगह) दुःख सहता है।

दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥
वह कुत्ते की तरह सबके दरवाजे पर घूमता रहता है, परन्तु उसे कभी भगवान का गुणगान करने की समझ नहीं होती ॥१॥

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥
(लोभ में फँसकर) प्राणी अपना मानव जन्म व्यर्थ ही खो देता है, (लोभ के कारण) लोगों से मिलने वाले उपहास तथा मजाक से भी उसे लज्जा नहीं आती।

नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥
हे नानक! (हे जीव! कहो!) तुम भगवान की महिमा क्यों नहीं करते? (केवल महिमा के आशीर्वाद से) तुम्हारी यह दुष्ट बुद्धि दूर हो जाएगी ॥२॥१॥२३३॥

Page 536

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु देवगंधारी महला ९ ॥
राग देवगण्धारी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥
यह मन एक क्षण के लिए भी मेरी बात नहीं मानता।

सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥
मैं इसे सिखाते-सिखाते थक गया हूँ, फिर भी यह अपनी दुष्ट बुद्धि से दूर नहीं होता ॥१॥ विराम॥

मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥
यह मन माया से मतवाला है, यह कभी भी भगवान की महिमा के शब्द नहीं बोलता।

करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥
दिखावे से संसार को धोखा देता रहता है, तथा (धोखे से एकत्र किए धन से) अपना पेट भरता रहता है ॥१॥

सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥
कुत्ते की दुम की तरह यह मन कभी सीधा नहीं रहता, यह दी गई शिक्षा को ध्यान से नहीं सुनता।

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥
हे नानक! कहो! प्रतिदिन उस ईश्वर का नाम जपो, जिसकी कृपा से तुम्हारी जन्म-इच्छा पूरी होगी ॥२॥१॥

देवगंधारी महला ९ ॥
राग देवगंधारी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
यह सब व्यवहार तथा संबंध जीवित होने से ही है,

मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे माता, पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार तथा यहाँ तक कि घर की पत्नी का संबद्ध भी ॥१॥ विराम॥

तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
(मृत्यु के समय) जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, (ये सभी रिश्तेदार) जोर से कहते हैं कि वह प्रेत है (मर गया है)।

आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥
कोई भी रिश्तेदार उसे आधा घंटे भी घर में नहीं रखता, उसे घर से बाहर निकाल देते हैं ॥१॥

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
अपने हृदय में विचार करके देखो, यह संसार मृग-तृष्णा के समान है (जैसे रेगिस्तान में प्यासा हिरण पानी के पीछे भागते हुए धोखा खाता; वैसे ही मनुष्य माया के पीछे भागते हुए आध्यात्मिक मृत्यु मरता है)।

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥
नानक कहते हैं, सदैव उस ईश्वर का नाम जपते रहो, जिसकी कृपा से मनुष्य (संसार की आसक्ति से) मुक्त हो जाता है ॥२॥२॥

देवगंधारी महला ९ ॥
राग देवगंधारी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
मैंने दुनिया में (रिश्तेदारों के बीच) सिर्फ झूठा प्यार ही देखा है।

अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥
पत्नी हो या मित्र, सब अपने सुख के लिए ही साथ चलते हैं ॥१॥ विराम॥

मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
सभी लोग कहते हैं, 'यह मेरा है, यह मेरा है', क्योंकि मन आसक्ति से बंधा हुआ है।

अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥
पर अन्तिम समय कोई संगी नहीं बनता। यह विचित्र रीति (दुनिया की) चलती आ रही है ॥१॥

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥
हे मूर्ख मन! मैं तुझे बार-बार शिक्षा देते-देते थक गया हूँ, फिर भी तू समझ नहीं रहा है।

नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥
हे नानक, कहो! जब मनुष्य परमात्मा की महिमा का गान करता है, तब वह संसार सागर से पार हो जाता है ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

Page 537

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु बिहागड़ा महला ९ ॥
राग बिहागड़ा में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
कोई भी इंसान नहीं जान सकता कि भगवान कैसा है,

जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥
कई योगी, कई तपस्वी तथा कई अन्य बुद्धिमान लोग (प्रभु के बारे खोजते हुए) हार चुके हैं ॥१॥ विराम॥

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
भगवान एक गरीब आदमी को एक पल में राजा बना देता है, तथा एक राजा को एक गरीब आदमी बना देता है,

रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥
वह खाली बर्तनों को भरता है तथा भरे हुए बर्तनों को खाली करता है (अर्थात् गरीब को अमीर बनाता है तथा अमीर को गरीब बनाता है)। यह उसका दैनिक कार्य है ॥१॥

अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
(इस दृश्यमान विश्वरूपी तमाशे में) भगवान ने अपनी माया स्वयं ही फैला रखी है, वे स्वयं ही इसका पालन कर रहे हैं।

नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥
वह भगवान अनेक रंगों वाला है, अनेक रूप धारण करता है, फिर भी वह सभी रूपों से पृथक रहता है ॥२॥

अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
उस ईश्वर के गुणों की गणना नहीं की जा सकती, वह अनंत है, वह अदृश्य है, वह निर्लिप्त है, उसी ने सम्पूर्ण जगत को (माया की) भटकना में डाल रखा है।

सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥
हे नानक! जिसने अपने मन को उनके (प्रभू के) चरणों में लगा दिया है, उसने माया के समस्त मोह को त्याग करके किया है ॥३॥१॥२॥

Page 631

सोरठि महला ९
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
हे मेरे मन! ईश्वर के प्रति प्रेम विकसित कर!

स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥
अपने कानों से परमेश्वर का गुणगान सुनो, तथा अपनी जीभ से परमेश्वर के (उसकी महिमा के) गीत गाओ ॥१॥ विराम॥

करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥
गुरुमुखों (धार्मिक पुरुषों) की संगति करो, प्रभु के नाम का स्मरण करते रहो! (स्मरण के आशीर्वाद से) दुष्ट भी पवित्र हो जाते हैं।

कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥
हे मित्र! (इस कार्य में आलस्य मत करो, देखो) मृत्यु मुँह खोले हुए साँप की तरह घूम रही है ॥१॥

आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥
अपने मन में यह समझ लो कि यह मृत्यु शीघ्र ही तुम्हें भी खा जायेगी।

कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥
नानक कहते हैं (तुमसे): (अब समय है) प्रभु की पूजा करो, यह समय बीत रहा है ॥२॥१॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन की मन ही माहि रही ॥
(अरे मनुष्य! देखो, माया के वशीभूत मनुष्य की दुष्टता! उसकी) मन की आशा मन में ही रह गई।

ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥
उसने न तो ईश्वर की आराधना की, न संतों की सेवा की, तथा मृत्यु आकर उसे बालों से पकड़ कर ले गई ॥१॥ विराम॥

दारा मीत पूत रथ स्मपति धन पूरन सभ मही ॥
(हे मनुष्य!) पत्नी, मित्र, पुत्र, वाहन, माल, धन, सम्पूर्ण पृथ्वी -

अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥
इन सब वस्तुओं को नाशवान समझो! भगवान का भजन ही सच्चा (साथी) है ॥१॥

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
तुम अनेक युगों से (योनियों में) भटकते-भटकते थक गए थे, (अब) तुम्हें मानव शरीर मिला है।

नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥
नानक कहते हैं, "यह तो भगवान से मिलने का समय है (हे मनुष्य!), अब तुम हरि-स्मरण क्यों नहीं करते?" ॥२॥२॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
हे मन, तूने कौन सी बुरी शिक्षा ग्रहण की है?

पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥
परस्त्री के रस में, पराई निंदा में तू मतवाला रहता है। तूने कभी भगवान की भक्ति नहीं की ॥१॥ विराम॥

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥
(हे मनुष्य!) तुमने अभी तक विकारों से मुक्त होने का उपाय नहीं समझा है; तुम सदैव धन-संचय के लिए दौड़ते रहते हो।

अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥
(संसार की वस्तुओं में) किसी ने कभी किसी का साथ नहीं दिया। तूने व्यर्थ ही अपने को (माया के मोह में) बाँध रखा है ॥१॥

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
(हे मनुष्य! अभी तक) न तो तुमने भगवान की भक्ति की है, न गुरु की शरण ली है तथा न ही तुम्हारे अन्दर आध्यात्मिक जीवन की समझ स्थापित हुई है।

घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥
माया से निर्लिप्त (निर्मल) भगवान तुम्हारे हृदय में निवास करते हैं, परन्तु तुम उन्हें बाहर वन में खोज रहे हो ॥२॥

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
अनेक योनियों में भटकते-भटकते तू (मनुष्य जन्म का युद्ध) हार गया है; तूने वह ज्ञान नहीं सीखा जिसके आशीर्वाद से तू (जन्म-जन्म के चक्र में) दृढ़निश्चयी रह सके।

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥
हे नानक! (कहो, हे मनुष्य! गुरु ने इसका स्पष्टीकरण किया है) कि मनुष्य जन्म की (उच्च) स्थिति प्राप्त करके, प्रभु का भजन करो ॥३॥३॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥
हे मन! भगवान की शरण में जाओ तथा उनके नाम का ध्यान करो।

जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥
जिस प्रभु का स्मरण करते हुए गनका (विकारों से) बच कई थी तुम भी उस भगवान की महिमा को अपने हृदय में स्थापित करो! ॥१॥ विराम॥

अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥
भगवान पर ध्यान लगाने से ध्रुव चिरस्थायी रूप से अटल हो गया तथा निर्भयता की आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर ली थी।

दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥
तुम यह क्यों भूल गये हो ईश्वर को जो ऐसे कष्टों का नाश करने वाला है। ॥१॥

जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥
जब कृपा के सागर भगवान की शरण ली तो वह गज-हाथी तंदुए के जाल से छूट गया था।

महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥
भगवान के नाम की महिमा का बखान कहाँ तक करूँ? भगवान का नाम जपने से उस (हाथी) के बंधन टूट गये ॥२॥

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥
सारा संसार जानता है कि अजामल दुष्ट था लेकिन (प्रभु-नाम का स्मरण करके) पलक झपकते ही उसका मोक्ष हो गया था।

नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥
नानक कहते हैं, (हे मनुष्य! तुम) उस प्रभु के नाम का ध्यान करो, जो सभी इच्छाओं को पूरा करता है। तुम भी (संसार सागर) से पार हो जाओगे ॥३॥४॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी कउनु उपाउ करै ॥
(हे मनुष्य! बताओ तो) आदमी क्या चाल चले,

जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥
जिससे भगवान की भक्ति प्राप्त हो सके तथा यम का भय दूर हो सके ॥१॥ विराम॥

कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥
(हे मनुष्य!) मुझे बताइए, वे कौन से धार्मिक कर्म हैं, वह कैसा ज्ञान है, वह कौन सा धर्म है, (जिसका आचरण मनुष्य को करना चाहिए)?

कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥
गुरु का बताया हुआ वह प्रभु-नाम क्या है जिसका ध्यान करने से मनुष्य संसार सागर से पार हो सकता है? ॥१॥

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
(अरे मनुष्य!) संसार में कृपा का एकमात्र खजाना भगवान का नाम है, जिसका जाप करने से (व्यक्ति) उच्च आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त करता है।

अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥
अन्य कोई भी कर्म उस (नाम) के समान नहीं है, वेद भी इस सत्य को कहते हैं ॥२॥

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥
जिसे (संसार) पृथ्वी का मालिक कहता है, वह सुख-दुःख से पृथक रहता है, वह (माया से) सदा निर्लिप्त रहता है।

सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥
हे नानक! (कहो कि वह तुम्हारे भीतर भी निवास कर रहा है, जैसे दर्पण में छवि निवास करती है। (मनुष्य को सदैव उसका ध्यान करना चाहिए।) ॥३॥५॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥
हे माता! मैं पृथ्वी के स्वामी को कैसे पहचान सकता हूँ?

महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन (तब) महान आसक्ति के अज्ञान में, आसक्ति के अंधकार में (सदैव) फंसा रहता है ॥१॥ विराम॥

सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥
हे माता! मैंने अपना सारा जीवन भटकने में ही नष्ट कर दिया है। अभी तक मुझे ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं हुई है, जो मुझे दृढ़निश्चयी रख सके।

बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥
मैं दिन-रात माया में डूबा रहता हूँ। मेरी यह दीनता मिट नहीं सकती ॥१॥

साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥
(हे माता!) मैं कभी गुरुमुखों की संगत में नहीं रहा, मैंने कभी भगवान की महिमा का गान नहीं किया।

जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥
हे दास नानक! (कहो, हे प्रभु!) मुझमें कोई गुण नहीं है। मुझे अपनी शरण में रखो! ॥२॥६॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मनु मेरो बसि नाहि ॥
हे माँ! मेरा मन मेरे नियंत्रण में नहीं है।

निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥
वह भौतिक वस्तुओं के लिए दिन-रात भागता रहता है। मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ? ॥१॥ विराम॥

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥
यह जीव वेद, पुराण तथा स्मृतियों का उपदेश सुनकर अपने हृदय में कम समय तक भी नहीं रखता।

पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥
दूसरे के धन तथा दूसरे की स्त्री के मोह में मदमस्त रहता है, (इस प्रकार) वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है ॥१॥

मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥
जीव माया के नशे में पागल हो रहा है, उसे आध्यात्मिक जीवन की कोई समझ नहीं है।

घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥
माया से विरक्त भगवान उसके हृदय में निवास करते हैं, परन्तु यह प्राणी उनके रहस्य को नहीं समझता ॥२॥

Page 633

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥
जब जीव गुरु की शरण में जाता है तो उसकी सारी नष्ट बुद्धि नष्ट हो जाती है।

तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥
तब हे नानक! वह सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले प्रभु का स्मरण करता है तथा उसके बंधन का फंदा कट जाता है ॥३॥७॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
हे मानव! इस सत्य को अपने हृदय में दृढ़ कर,

सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥
(वह) सम्पूर्ण जगत स्वप्न के समान है, (उसका) नाश होने में देर नहीं लगती ॥१॥ विराम॥

बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥
(अरे मनुष्य!) (यह तो ऐसा है जैसे किसी ने रेत की दीवार बनाकर ऊपर में लेप लगा करके तैयार कर दी हो; परन्तु वह दीवार चार दिन भी नहीं टिकती।)

तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥
इस माया के सुख भी उसी (रेत की दीवार) के समान हैं। हे मूर्ख! तू इन सुखों में क्यों मदमस्त है? ॥१॥

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥
समझ लो कि अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है; तथा भगवान का नाम स्मरण करो।

कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥
नानक कहते हैं, (हे मनुष्य!) मैं गुरुमुखों के इस निजी विचार को तुम्हारे समक्ष कह रहा हूँ ॥२॥८॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
(हे मनुष्य!) मैंने इस संसार में कोई ऐसा मित्र नहीं देखा (जो अखीर तक साथ निभाने वाला हो)।

सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥
अपने ही सुख में मग्न है सारा संसार, दुःख में कोई साथी नहीं बनता ॥१॥ विराम॥

दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥
स्त्री, मित्र, पुत्र, सम्बन्धी - ये सभी धन से प्रेम करते हैं।

जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥
जैसे ही वे किसी व्यक्ति को गरीबी में देखते हैं, वे उसे छोड़कर भाग जाते हैं ॥१॥

कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥
इस मूर्ख मन को क्या समझाऊँ? (इसने) इन (कच्चे साथियों) से प्रेम कर लिया है।

दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥
वह उस ईश्वर की महिमा को भूल गया है जो दीनों का रक्षक है तथा समस्त भय का नाश करने वाला है ॥२॥

सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥
जैसे कुत्ते की दुम सीधी नहीं होती (उसी प्रकार इस मन की भगवान के स्मरण से उदासीनता दूर नहीं होती), मैंने बहुत प्रयत्न किया है।

नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥
हे नानक! (कह कि हे भगवान!) मूल वाले (प्रेमपूर्ण) स्वभाव का ध्यान करो (मेरी सहायता करो, तभी) मैं आपका नाम जप सकूँगा ॥३॥९॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥
हे मन, तू गुरु की शिक्षा को स्वीकार नहीं करता।

कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥
(अरे मनुष्य! गुरु की शिक्षा भूलकर, बेशक ही सिर मुंडा लो) पर यदि तुम भगवा वस्त्र भी पहनोगे तो तुम्हारा क्या बना? (तुम्हें आध्यात्मिक जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं होआ।) ॥१॥ विराम॥

साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥
(हे मनुष्य! तुमने भगवा वस्त्र तो धारण कर लिया है, परन्तु) तुमने भगवान के सदैव रहने वाला नाम को त्याग दिया है तथा अपना मन नाशवान वस्तुओं में लगा रखा है।

करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥
(लोगों को) धोखा देकर अपना पेट भरता रहा, तथा जानवरों की तरह सोता रहा ॥१॥

राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥
(हे गाफिल मनुष्य) भगवान की स्तुति करने की बुद्धि को नहीं समझता तथा माया के हाथों बिका रहता है।

उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥
मूर्ख मनुष्य भौतिक पदार्थों की आसक्ति में ही उलझा रहता है तथा भगवान के उत्तम रत्न-नाम को भूल जाता है ॥२॥

रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥
(माया में फंसा हुआ मनुष्य) असावधान रहता है, भगवान को याद नहीं करता तथा अपना पूरा जीवन व्यर्थ ही बिता देता है।

कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥
नानक कहता है कि हे हरि अपने मूल के (प्रेमपूर्ण) स्वभाव को याद करो। ये प्राणी तो सदैव भुलक्कड़ रहते हैं ॥३॥१०॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
(हे मनुष्य!) जो मनुष्य दुःख में भी नहीं डरता,

सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥
जिस मनुष्य का हृदय भोगों की आसक्ति से रहित है, तथा (किसी भी प्रकार के) भय से मुक्त है, जो मनुष्य सोने को धूल के समान समझता है, (उस के अंदर भगवान का निवास हो जाता है) ॥१॥ विराम॥

नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
जिस व्यक्ति में किसी की बुरी चुगली या खुशामद की आदत नहीं है, जिसमें लोभ नहीं है, मोह नहीं है, अहंकार नहीं है;

हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
जो मनुष्य सुख-दुःख से विरक्त रहता है, जिस पर उस के सम्मान या अपमान का कोई असर नहीं होता (ईश्वर उस मनुष्य के हृदय में निवास करता है) ॥१॥

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
जो मनुष्य समस्त आशाओं तथा अपेक्षाओं को त्यागकर संसार से विरक्त रहता है,

कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
जिस व्यक्ति को न तो काम छू सकता है तथा न ही क्रोध, भगवान उसके हृदय में निवास करते हैं ॥२॥

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
(परन्तु) जिस व्यक्ति पर गुरु ने कृपा कर दी है, वह इस (जीवन की) परीक्षा को समझ गया है।

नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥
हे नानक! कहो कि जैसे जल, जल के साथ एक हो जाता है, वैसे ही मनुष्य भी परमात्मा के साथ एक हो जाता है ॥३॥११॥

Page 634

सोरठि महला ९ ॥
राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
हे मित्र! इसे अपने मन में दृढ़ करो तथा समझो कि

अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥
(यह) सारा जगत अपने ही सुख में बंधा हुआ है। कोई किसी का दूर का संगी नहीं (बनता) ॥१॥ विराम॥

सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥
(हे मित्र! मनुष्य के) सुखी होने पर बहुत से मित्र इकट्ठे होकर उसके पास बैठ जाते हैं तथा उसे चारों ओर से घेर लेते हैं।

बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥
(परन्तु) जब वह संकट में पड़ता है, तो सब उसे छोड़ देते हैं, (तब) कोई उसके निकट नहीं आता ॥१॥

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥
(हे मित्र!) घर की स्त्री, जिससे बहुत प्रेम किया जाता है, जो सदा (पति के) साथ रहती है,

जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥
जिस समय (पति की) आत्मा इस शरीर को छोड़ती है, पत्नी यह कहकर उससे दूर हो जाती है कि, "वह मर गया, वह मर गया" ॥२॥

इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥
(हे मित्र! संसार) ऐसा व्यवहार बन गया है कि (मनुष्य) उससे प्रेम करने लगा है,

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥
परन्तु हे नानक! (कहो कि) अन्तिम समय में ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी (मनुष्य की) सहायता नहीं कर सकता ॥३॥१२॥१३९॥

Page 684

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

धनासरी महला ९ ॥
राग धनसरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

काहे रे बन खोजन जाई ॥
तुम (भगवान को) खोजने के लिए जंगलों में क्यों जाते हो?

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान तो सब में निवास करता है, फिर भी सदैव माया से निर्लिप्त रहता है। वह भगवान तुम्हारे साथ रहता है ॥१॥ विराम॥

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
जैसे सुगंध फूल में निवास करती है, तथा जैसे ही दर्पण में छवि निवास करती है,

तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥
इस प्रकार, ईश्वर सभी चीजों के भीतर रहता है। (इसलिए, उसे) अपने हृदय में खोजें ॥१॥

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
गुरु की शिक्षा (आध्यात्मिक जीवन की ओर) हमें यह बताती है कि एक ईश्वर को अपने शरीर के भीतर (तथा शरीर के बाहर) (सर्वत्र) निवास करने वाला मानो।

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥
हे सेवक नानक! अपने आध्यात्मिक जीवन की जांच किए बिना भटकाव का जाल (मन से) नहीं हट सकता (तथा तब तक सर्वव्यापी ईश्वर का ज्ञान नहीं हो सकता) ॥२॥१॥

धनासरी महला ९ ॥
राग धनासरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
हे संतों! यह संसार माया के मोह में खोया रहता है।

राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥
वह भगवान के नाम का ध्यान त्याग देता है, तथा माया के हाथों में बिक जाता है (माया के बदले में वह अपना आध्यात्मिक जीवन खो देता है) ॥१॥ विराम॥

मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥
(हे संत जनो) माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री - (संसार को भूलकर) मनुष्य इन्हीं की आसक्ति में फंसा रहता है।

Page 685

जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥
दुनिया जवानी, धन तथा शक्ति के नशे में दिन-रात मदमस्त रहती है ॥१॥

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥
संसार उस ईश्वर पर अपना ध्यान नहीं लगाता जो दीन-दुखियों पर दया करने वाला है, जो सभी दुखों का नाश करने वाला है।

जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥
हे सेवक नानक! कहो कि करोड़ों में कोई अनोखा ही है जो गुरु की शरण में गया हो तथा परमात्मा से मिलन प्राप्त किया हो ॥२॥२॥

धनासरी महला ९ ॥
राग धनासरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥
(हे मनुष्य!) मैं समझता हूँ कि उस योगी ने अभी तक जीवन की निपुणता नहीं ली है,

लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके हृदय में लोभ, मोह तथा आसक्ति की लहरें उठती देखता हूँ ॥१॥ विराम॥

पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥
जिस मनुष्य के हृदय में दूसरों की निंदा नहीं होती, दूसरों की खुशामद नहीं होती, जिसके लिए सोना तथा लोहा एक समान होते हैं,

हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥
जो सुख-दुःख से पृथक रहता है, उसे योगी कहते हैं ॥१॥

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥
(अरे भाई!) यह सदा भटकने वाला मन दसों दिशाओं में दौड़ता है। जिस मनुष्य ने इसे दृढ़निश्चयी तथा एकरस बना लिया है,

कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥
नानक कहते हैं कि इस प्रकार के व्यक्ति के बारे में समझना चाहिए कि वह विकारों से मुक्त हो गया है ॥२॥३॥

धनासरी महला ९ ॥
राग धनासरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

अब मै कउनु उपाउ करउ ॥
(अरे मनुष्य!) अब क्या प्रयास करूँ?

जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥
(जिस से) मेरे मन का भय चला जाये तथा मैं संसार-सागर से पार (मुक्त) हो जाऊं ॥१॥ विराम॥

जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥
मैंने मनुष्य जन्म लेकर कोई अच्छा काम नहीं किया, इसलिए मैं बहुत डर रहा हूँ।

मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥
मैं अपने जीवन में यह चिंता करता रहता हूँ कि मैंने मन से, वचनों से तथा कर्म से भगवान का गुणगान नहीं करता रहा ॥१॥

गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
गुरु का ज्ञान सुनकर भी मुझमें आध्यात्मिक जीवन की कोई अंतर्दृष्टि उत्पन्न नहीं हुई; मैं पशु की तरह अपना पेट भरता हूँ।

कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥
नानक कहते हैं, हे प्रभु! मैं दुष्ट, (संसार सागर को) तभी पार कर सकता हूँ, जब आप अपने मूल (प्रेमपूर्ण) स्वभाव को याद रखें ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

Page 702

जैतसरी महला ९
राग जैतसरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥
जो मन (जीवन का सही मार्ग) भूल गया है, वह (माया के मोह में) फंसा रहता है।

जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
(फिर) जो मनुष्य लोभ में फँसकर जो कुछ भी करता है, उनके द्वारा वह स्वयं को (माया की आसक्ति में) तथा अधिक फँसाता है ॥१॥ विराम॥

समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥
(हे मनुष्य! जो व्यक्ति जीवन के सही मार्ग से भटक गया है) वह आध्यात्मिक जीवन को नहीं समझता, भोगों के स्वाद में मदमस्त रहता है, तथा भगवान की महिमा को भूल जाता है।

संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥
भगवान उसके सदस्यों के साथ रहते हैं, परन्तु उसका उनसे गहन सम्बन्ध नहीं बनता, इसलिए वह जंगल की ओर भाग जाता है उस को पाने कि लिये ॥१॥

रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥
भगवान का रत्न जैसा अनमोल नाम हृदय में रहता है (परन्तु भुलक्कड़ मनुष्य) उससे सम्बन्ध नहीं बनाता।

जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥
हे दास नानक! कहो कि ईश्वर की भक्ति के बिना मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर देता है ॥२॥१॥

जैतसरी महला ९ ॥
राग जैतसरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
हे प्रभु, मेरी लाज रखना।

जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥
मृत्यु का भय मेरे हृदय में बसा है। (उससे बचने के लिए) हे कृपा के भण्डार प्रभु! मैं आपकी शरण में आया हूँ ॥१॥ विराम॥

महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥
(हे प्रभु!) मैं महा-पापी हूँ, मूर्ख हूँ, लोभी हूँ, पाप करते-करते अब थक गया हूँ।

भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥
मैं मृत्यु के भय को कभी नहीं भूल सकता, इसकी चिंता ने मेरे शरीर को जला दिया है ॥१॥

कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
(मृत्यु के भय से) मोक्ष प्राप्ति करने के लिए मैंने अनेक उपाय किए हैं, उठकर सब दिशाओं में दौड़ा हूँ।

घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥
(माया की आसक्ति से) निर्लिप्त भगवान हृदय में ही निवास करते हैं, उनका रहस्य मैं नहीं समझ पाया हूँ ॥२॥

नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥
(भगवान की शरण के अतिरिक्त) न कोई पुण्य है, न कोई जप है, न कोई तप है (जो हमें मृत्यु के भय से बचा सके, तब) अब कौन सा कार्य करना चाहिए?

नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥
हे नानक! हे प्रभु! मैं (अन्य साधनों से) पराजित होकर आपकी शरण में आया हूँ। मुझे मृत्यु के भय से मुक्ति का वरदान दीजिए ॥३॥२॥

जैतसरी महला ९ ॥
राग जैतसरी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
हे मेरे मन! इन महत्वपूर्ण विचारों को (अपने भीतर) संभाल कर रखो कि

राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥
भगवान के नाम के बिना यह संसार नाशवान है ॥१॥ विराम॥

जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥
हे मेरे मन! जिस भगवान को खोजते-खोजते योगी थक गए, तथा जिसके स्वरूप का अंत नहीं पा सके।

सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥
तुम उस प्रभु को अपने नजदीक में निवास करते हुए समझो, परन्तु उसका कोई रूप या कोई चिन्ह वर्णित नहीं किया जा सकता ॥१॥

पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि स्मभारा ॥
(हे मेरे मन!) संसार में हरि-नाम ही पवित्र करने वाला है, तूने उस नाम को कभी अपने अन्दर संभाल नहीं रखा।

नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥
हे नानक! (कह कि) हे जगत के नमस्कार के योग्य प्रभु! मैं आपकी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा कीजिए! यह आपका सनातन स्वभाव है (कि आप शरण में आए हुए की रक्षा करते हैं) ॥२॥३॥

Page 718

टोडी महला ९
राग तोडी में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥
(अरे मनुष्य!) अपनी दीनता का कितना वर्णन करूँ?

उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने (कभी) भगवान की महिमा नहीं की, (मेरा मन) धन तथा स्त्रियों के भोगों में फंसा रहता है ॥१॥ विराम॥

जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥
इस नाशवान संसार को सदैव रहने वाला मानकर मैंने इस संसार में ही प्रीति कर ली है।

दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥
मैंने कभी भी उस ईश्वर का नाम स्मरण नहीं किया जो दीन-दुखियों का सगा है तथा जो सदैव हमारे साथ सहायक के रूप में रहता है ॥१॥

मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥
मैं दिन-रात माया के मोह में मदमस्त रहता हूँ, (इस प्रकार) मेरे मन का मैल दूर नहीं हुआ है।

कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥
नानक कहते हैं कि अब (जब मैंने गुरु की शरण ली है, तब मुझे समझ में आ गया है) कि प्रभु की शरण लिए बिना अन्यत्र उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त नहीं हो सकती ॥२॥१॥३१॥

तिलंग महला ९ काफी
राग तिलंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

Page 726

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
हे मनुष्य! यदि तू भगवान के नाम का स्मरण करना चाहता है तो हर दिन-रात में ध्यान करना शुरू कर दे।

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥
(क्योंकि) जैसे फूटे हुए बर्तन से पानी धीरे-धीरे से निकल जाता है, वैसे ही जीवन भी एक-एक पल बीतता जा रहा है ॥१॥ विराम॥

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
हे मूर्ख! हे नासमझ! तू परमेश्वर की महिमा के गीत क्यों नहीं गाता?

झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥
माया के झूठे लोभ में फँसे हुए, तुझे मृत्यु की भी याद नहीं रहती ॥१॥

अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
तथापि यदि कोई व्यक्ति भगवान का गुणगान करने लगे (चाहे हरि-नाम स्मरण के बगैर कितना ही समय बीत गया हो) तो कोई हानि नहीं है, (क्योंकि)

कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥
मनुष्य उस आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त करता है जहाँ कोई भय नहीं पहुँच सकता ॥२॥१॥ नोट: काफी एक रागनी का नाम है। ये शब्द तिलंग तथा काफी दोनों मिश्रित रागों में गाये जाने हैं।

तिलंग महला ९ ॥
राग तिलंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
हे मन! सावधान हो जा! तू (माया के मोह में) क्यों बेपरवाह होकर सो रहा है?

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥
(देखो,) जो (मनुष्य का) शरीर उस के साथ पैदा होता है, वह भी अंत में उसके साथ नहीं जाता ॥१॥ विराम॥

मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
(हे मन! देखो,) माता, पिता, पुत्र, सगे-संबंधी, जिनसे मनुष्य जीवन भर प्रेम करता है,

जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥
जब आत्मा शरीर से अलग हो जाए, तब (वह सब सगे-संबंधी) उसके शरीर को अग्नि में डाल देते हैं ॥१॥

Page 727

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
(हे मन!) जगत को ऐसा समझ (कि यहाँ) मनुष्य का व्यवहार जीवन-प्रान्त तक ही रहता है।

नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥
हे नानक! (कहो) "हालाँकि, यह सब स्वप्न के समान है। (इसलिए, जब तक तुम जीवित रहो,) ईश्वर का गुणगान करो!" ॥२॥२॥

तिलंग महला ९ ॥
राग तिलंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
हे मन! प्रभु की महिमा का गीत गा, यही महिमा तेरी सच्ची साथी है।

अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी बात मानो। जीवन का समय बीत रहा है ॥१॥ विराम॥

स्मपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥
(हे मन!) मनुष्य धन, रथ, सम्पत्ति तथा राज्य में बहुत आसक्त रहता है।

काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥
परन्तु जब मृत्यु का फंदा उसके गले में पड़ता है, तो सब कुछ पराया हो जाता है ॥१॥

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
अरे मूर्ख! यह सब जानते तथा समझते हुए भी तू अपना काम बिगाड़ रहा है।

पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥
तुम पाप करके कभी पश्चाताप नहीं करते, न ही (इस धन का) अभिमान त्यागते हो ॥२॥

जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
हे भाई! गुरु ने मुझे जो सिखाया है, उसे सुनो।

नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥
नानक तुम्हें पुकारकर कहते हैं, "प्रभु की शरण लो (सदैव प्रभु का नाम जपो)" ॥३॥३॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे
राग बिलावलु की धुन में श्री गुरु तेग बहादुर जी का दो छंद वाला भजन।

Page 830

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥
(हे मनुष्य!) अपने हृदय में हरि-नाम का परिचय बनाए रखो जो दुखों का नाश करने वाला है।

अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥
नाम स्मरण से अजामल तथा गणिका विकारों से मुक्त हो गए। तुम भी भगवान के नाम का ध्यान करते रहो ॥१॥ विराम॥

गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥
जब गज-हाथी ने भगवान का नाम लिया तो उसका संकट क्षण भर में दूर हो गया।

नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥
नारद जी का उपदेश सुनकर बालक ध्रुव भगवान के भजन में मग्न हो गया ॥१॥

अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥
(भगवान के नाम के जाप के आशीर्वाद से, ध्रुव) ने ऐसी आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की कि वह शाश्वत तथा अमर हो गया। दुनिया उसे देखकर आश्चर्यचकित है।

नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥
नानक कहते हैं, "(हे मनुष्य!) तुम भी उस ईश्वर को अपने भीतर ही सदा निवास करने वाला मानो। वह ईश्वर अपने भक्तों का रक्षक है" ॥२॥१॥

बिलावलु महला ९ ॥
राग बिलावल में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥
(हे मनुष्य!) परमात्मा के नाम (स्मरण) के बिना मनुष्य दुःख भोगता रहता है।

भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ ॥
जीवन पथ के गुरु हमें यह गहन सत्य बताते हैं कि भगवान की भक्ति के बिना मनुष्य का भय समाप्त नहीं होता ॥१॥ विराम॥

कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥
यदि मनुष्य भगवान की शरण में नहीं जाता तो उसके तीर्थयात्रा तथा व्रत-उपवास से कोई लाभ नहीं है।

Page 831

जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥
जो मनुष्य भगवान की महिमा को भूल जाता है, उसके साधन तथा सांसारिक कार्य व्यर्थ हैं ॥१॥

मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥
जो व्यक्ति अहंकार तथा माया के प्रति आसक्ति को त्याग देता है तथा भगवान की महिमा का गान करता रहता है,

कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥
नानक कहते हैं कि जो व्यक्ति इस प्रकार का जीवन जीता है वह जीवन से मुक्त हो जाता है। ऐसा कहा जाता है (वह व्यक्ति उन लोगों में गिना जाता है जो इस जीवन में विकारों की पकड़ से मुक्त रहते हैं) ॥२॥२॥

बिलावलु महला ९ ॥
राग बिलावल में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जा मै भजनु राम को नाही ॥
(हे मनुष्य!) जिस मनुष्य के भीतर भगवान का नाम-स्मरण नहीं है,

तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥
यह दृढ़ता से याद रखो कि उस आदमी ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है ॥१॥ विराम॥

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
जिस मनुष्य का मन उसके वश में नहीं है, वह चाहे तीर्थों में स्नान करें, व्रत रखे,

निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥
परन्तु (जो तीर्थ तथा व्रत आदि का पालन करता है) तू उसका धर्म व्यर्थ समझ, ऐसे मनुष्य को भी मैं यह सत्य बात कहता हूँ ॥१॥

जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
जैसे पत्थर को पानी में डाल दिया जाए तो पानी उसे छेद नहीं सकता। (पानी उस पर असर नहीं कर सकता)

तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥
इसी प्रकार उस व्यक्ति पर भी विचार करो जो भगवान की भक्ति से वंचित रह जाता है ॥२॥

कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥
गुरु जीवन का यह रहस्य बताते हैं कि मानव जीवन में केवल भगवान के नाम से ही विकारों से मुक्ति मिल सकती है।

कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥
नानक कहते हैं कि वह व्यक्ति सम्मान के योग्य है जो ईश्वर का गुणगान करता रहता है ॥३॥३॥ नोट: श्री गुरु तेग बहादुर जी साहिब के ये तीन शब्द बिलावल राग में हैं।

Page 901

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥
राग रामकली में श्री गुरु तेग बहादुर जी का तीन पंक्तियों वाला भजन।

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
हे मेरे मन! भगवान के नाम की शरण ले,

जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ ॥
नाम के स्मरण से दुष्ट बुद्धि नष्ट हो जाती है, (नाम की कृपा से), तुम उस आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त करोगे, जहाँ कोई भी वासना नहीं पहुँच सकती ॥१॥ विराम।

बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥
हे मेरे मन! जो व्यक्ति भगवान का गुणगान करता है, उसे तू बड़ा भाग्यशाली समझ।

जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥
वह मनुष्य अनेक जन्मों के पापों को नष्ट करके फिर स्वर्ग में पहुंचता है ॥१॥

अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥
(हे मेरे मन! देख, एक पुरानी तथा प्रसिद्ध कथा है कि) अन्त समय में (पापी) अजामल को भगवान का नाम ज्ञात हो गया,

जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥
उन्होंने क्षण भर में ही वह उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली, जिस आध्यात्मिक अवस्था के लिए बड़े-बड़े योगी तरसते हैं ॥२॥

नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥
(हे मेरे मन! गज-हाथी की कथा भी सुन ले!) गज में न कोई गुण था, न कोई शिक्षा थी। गज को कौन-सा धार्मिक कार्य करना था?

नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥
हे नानक! परन्तु देखो, ईश्वर का मूल स्वभाव, ईश्वर ने उस गज को अभय का पद प्रदान किया है ॥३॥१॥

रामकली महला ९ ॥
राग रामकली में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो कउन जुगति अब कीजै ॥
हे संतों! अब (इस मनुष्य जन्म में) क्या उपाय है?

जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥
जिसके करने से (मनुष्य के भीतर से) सभी मिथ्या विश्वास नष्ट हो जाए तथा (मनुष्य का) मन भगवान की भक्ति में लग जाए? ॥१॥ विराम॥

मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥
(हे संत जनो! अक्सर मनुष्य का मन) माया के मोह में ही उलझा रहता है। मनुष्य इस ज्ञान की बात पर क्षण भर भी विचार नहीं करता।

कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥
वह कौन सा नाम है जिसका स्मरण करने से संसार कामनाओं से मुक्त होकर आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त करता है? ॥१॥

भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥
जब संतजन दयालु तथा कृपालु होते हैं, तब वे उससे कहते हैं:

सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥
जिस व्यक्ति ने भगवान का गुणगान करना आरम्भ कर दिया है, समझो उसने सभी धार्मिक कार्य पूर्ण कर लिए हैं ॥२॥

राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥
(जो) दिन हो या रात, पलक भर के लिए भी भगवान के नाम का हृदय में ध्यान करता है,

जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥
हे नानक! वह अपना (मानव) जन्म सफल कर लेता है, उसके हृदय से मृत्यु का भय दूर हो जाता है ॥३॥२॥

रामकली महला ९ ॥
राग रामकली में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥
अपने हृदय में ईश्वर का स्मरण बनाए रखें।

छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥
दिन-रात तेरा जीवन पल-पल घट रहा है। (प्रभु स्मरण के बिना तेरा मानव) शरीर व्यर्थ जा रहा है ॥१॥ विराम॥

तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥
(जीव भी विचित्र रूप से दुर्भाग्यशाली है) कि उसने अपना यौवन विषय-वासनाओं में तथा बचपन अज्ञानता में खो दिया है;

बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥
(अब) वह बूढ़ा हो गया है, फिर भी उसे समझ नहीं आती। (उसे नहीं मालूम) कि वह किस मिथ्या विश्वास में फंसा हुआ है ॥१॥

मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥
जिस प्रभु ने तुझे मनुष्य जन्म दिया है, उसे तू क्यों भूल रहा है?

मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥
हे मनुष्य! जिस प्रभु के नाम के स्मरण से मनुष्य पलक भर में भी माया के बंधनों से मुक्त हो जाता है, तू उस प्रभु का पल भर भी गुणगान नहीं करता ॥२॥

माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥
हे मनुष्य! तू माया पर इतना गर्व क्यों करता है? (वह) किसी के साथ (अन्त में) नहीं जाती।

नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥३॥३॥८१॥
नानक कहते हैं, ईश्वर का ध्यान करते रहो। अंत में वही तुम्हारा सहायक होगा ॥३॥३॥८१॥

Page 1008

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

मारू महला ९ ॥
राग मारू में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥
भगवान का नाम सदैव आध्यात्मिक आनंद का स्रोत है,

जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिस नाम का स्मरण करके अजामल पापों से बचा था, (उसी नाम का स्मरण करके) वह वेश्या ने भी उच्च आध्यात्मिक गति प्राप्त कर ली ॥१॥ विराम॥

पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥
दुर्योधन के दरबार में द्रौपदी ने भी भगवान के नाम का ध्यान किया था।

ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥
तथा दयालु भगवान ने उसके कष्ट दूर कर दिए थे, (तथा इस प्रकार) उसने अपना यश बढ़ाया था ॥१॥

जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥
जिन लोगों ने अनुग्रह के खजाने परमेश्वर की महिमा की, उन्हें परमेश्वर से बड़ी सहायता मिली।

कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥
नानक कहते हैं कि मैंने भी इसी विश्वास के साथ ईश्वर की शरण ली है ॥२॥१॥

मारू महला ९ ॥
राग मारू में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

अब मै कहा करउ री माई ॥
हे माता! (समय पूरा हो जाने पर) अब मैं क्या कर सकता हूँ? (अर्थात् जब समय पूरा हो जाता है तो मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है)।

सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥
अपना पूरा जीवन भौतिकवादी गतिविधियों में बर्बाद कर दिया तथा कभी भी भगवान के नाम का स्मरण नहीं किया (वह समय बर्बाद करने के बाद फिर कुछ नहीं कर सकता) ॥१॥ विराम॥

काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥
(हे माता!) यमराज जब किसी के गले में मृत्यु का पाश डालते हैं, तो उसे उसकी सारी बुद्धि भुला देते हैं।

राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥
उस विपत्ति में भगवान के नाम के अलावा कोई भी सहायता नहीं कर सकता (केवल भगवान का नाम ही संचय के जाल से, आध्यात्मिक मृत्यु से, भय से बचाता है) ॥१॥

जो स्मपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥
हे माता! जिस धन-पदार्थ को मनुष्य सदैव अपना मानता है (मृत्यु आने पर वह धन-पदार्थ) वह क्षण भर में पराया हो जाता है।

कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥
नानक कहते हैं कि उस समय व्यक्ति का हृदय इस पश्चाताप से भरा रहता है कि उसने कभी ईश्वर की महिमा नहीं की ॥२॥२॥

मारू महला ९ ॥
राग मारू में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥
हे माता! (जब से मुझे गुरु के चरणों में प्रेम मिला है, तब से मुझे इस बात का दुःख है कि) मैंने अपने मन का अहंकार नहीं छोड़ा।

माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥
मैंने अपना जीवन माया के नशे में बिता दिया तथा भगवान की भक्ति में मन नहीं लगाया ॥१॥ विराम॥

जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥
(मनुष्य माया की नींद में असावधान रहता है) जब यमदूत का दण्ड उसके सिर पर रहता है, तब वह (माया की आसक्ति की नींद से) जाग जाता है।

कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥१॥
उस समय पछताने से कुछ लाभ नहीं होता, (क्योंकि उस समय) यम से मुक्ति नहीं मिलती ॥१॥

इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥
जब मनुष्य को गुरु के चरणों में प्रेम हो जाता है, तब उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न होता है (कि प्रभु की भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ होता रहा)।

सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥२॥३॥
हे नानक! मनुष्य का जीवन तभी सफल होता है, जब वह (गुरु की शरण में जाकर) अपने आपको ईश्वर की महिमा में एक कर लेता है ॥२॥३॥

Page 1186

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥
श्री गुरु तेग बहादुर जी की बानी राग बसंत/हिंडोल में।

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥
हे संतों, इस शरीर को नाशवान समझो।

या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥
इस शरीर में जो प्रभु-हस्ती निवास कर रही है, उसे ही तू सदैव रहने वाला जान ॥१॥ विराम॥

इहु जगु है स्मपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
यह संसार स्वप्न में मिलने वाले धन के समान है (जो जागने पर लुप्त हो जाता है), इसे देखकर तू क्यों अभिमान करता है?

संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥
यहाँ से कुछ भी तुम्हारे साथ नहीं जा सकता (अंत समय में)। फिर तुम इसमें क्यों आसक्त हो? ॥१॥

उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥
खुशामद तथा निंदा - इन दोनों चीजों को त्याग दो। केवल अपने हृदय में परमेश्वर की महिमा को स्थापित करो।

जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥
हे दास नानक! (कहो, हे मनुष्य!) वही ईश्वर (प्रशंसनीय है जो) सब प्राणियों में व्याप्त है ॥२॥१॥ नोट: ये शब्द मिश्रित राग 'बसंत' तथा 'हिंडोल' दोनों में गाये जाने हैं।

बसंतु महला ९ ॥
राग बसंत में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥
पाप की ओर ले जाने वाली वासना (मनुष्य के) हृदय में रहती है,

मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
इसी कारण (मनुष्य का) चंचल मन वश में नहीं किया जा सकता ॥१॥ विराम॥

जोगी जंगम अरु संनिआस ॥
योगी, जंगम तथा संन्यासी (जिन्होंने स्वयं माया का त्याग कर दिया है) -

सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥
उन सब पर माया ने यह फंदा (वासना का) डाल दिया है ॥१॥

जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥
जिसने भी अपने हृदय में ईश्वर का नाम बसा लिया है,

ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥
वे सम्पूर्ण संसार-सागर (दुष्प्रवृत्तियों रूपी) को पार कर जाते हैं ॥२॥

जन नानक हरि की सरनाइ ॥
हे नानक! परमात्मा का सेवक परमात्मा की शरण में रहता है (वह परमात्मा के द्वार पर विनती करता रहता है कि)

दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥
हे प्रभु! अपने सेवक को अपना नाम दीजिए ताकि वह (आपका सेवक) आपका गुणगान करें) (जिससे वह काम तथा दोषों से मुक्त रहे) ॥३॥२॥

बसंतु महला ९ ॥
राग बसंत में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
हे माँ! जब मैंने गुरु की शरण में आकर भगवान के नाम का धन प्राप्त कर लिया है,

मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन (माया के लिए) इधर-उधर भागने से बच गया है, (अब मेरे मन ने नाम-धन में अपना स्थान बना लिया है) ॥१॥ विराम॥

माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
(गुरु की कृपा से) मेरे शरीर से माया का मोह दूर हो गया है तथा मुझे शुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो गया है।

लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥
(जब से) मेरे हृदय में भगवान की भक्ति स्थापित हो गई है, तब से लोभ तथा मोह मुझ पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते ॥१॥

जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥
जब से मुझे भगवान का अनमोल नाम (गुरु की कृपा से) मिला है, तब से मेरा जन्म-जन्मों का भय समाप्त हो गया है।

त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥
मेरे मन से सारी तृष्णाएँ लुप्त हो गई हैं, अब मैं उस आनंद में निवास करता हूँ जो सदा मेरे साथ रहेगा ॥२॥

जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥
हे माता! कृपा के भण्डार गोबिंद जिस पर भी कृपा करते हैं, वह उसका गुणगान करते रहते हैं।

कहु नानक इह बिधि की स्मपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥
नानक कहते हैं कि (हे माता) कोई अनोखा ही गुरु के सान्निध्य में रहकर इस प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त करता है ॥३॥३॥

बसंतु महला ९ ॥
राग बसंत में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥
हे मन! तू भगवान का नाम क्यों भूल गया?

तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥
(जब) शरीर नष्ट हो जाता है, (तब भगवान के नाम के बिना) संचय से निपटना पड़ता है ॥१॥ विराम॥

इहु जगु धूए का पहार ॥
हे मन! यह संसार तो मानो धुएँ का पर्वत है (जो हवा के एक झोंके से उड़ जाता है)।

Page 1187

तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥
(हे मन!) तू क्या सोचता है कि तू (इस संसार को) शाश्वत मानता है? ॥१॥

धनु दारा स्मपति ग्रेह ॥
(हे मन! यह अच्छी तरह समझ ले कि) धन, स्त्री, संपत्ति, मकान-

कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥
इनमें से कोई भी वस्तु (मृत्यु के समय) जीव के साथ नहीं जाती ॥२॥

इक भगति नाराइन होइ संगि ॥
केवल ईश्वर के प्रति भक्ति ही शेष रहती है।

कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥
(इसलिए) नानक कहते हैं, "केवल ईश्वर के प्रेम में रहकर उसकी भक्ति करो"! ॥३॥४॥

बसंतु महला ९ ॥
राग बसंत में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥
(हे मनुष्य!) इस नाशवान संसार के लोभ में फँसकर तुम कहाँ भटक रहे हो?

कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥
अभी कुछ नहीं बिगड़ा (अगर तुम अपना शेष जीवन नाम-स्मरण में लगा दे), अब समझदार बनो! ॥१॥ विराम॥

सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥
इस संसार को स्वप्न में देखी हुई वस्तु समझो।

बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥
इस सत्य समझो कि (यह संसार) क्षण भर में नष्ट हो जाता है ॥१॥

संगि तेरै हरि बसत नीत ॥
ईश्वर सदैव तुम्हारे साथ रहता है।

निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥
(हे मित्र!) तुम्हें दिन-रात उनका भजन करना चाहिए ॥२॥

बार अंत की होइ सहाइ ॥
अंत में केवल भगवान ही मददगार बनता है।

कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥
नानक कहते हैं, "(हे मनुष्य!) तुम (सदैव) उनके गुण गाते रहो" ॥३॥५॥

Page 1231

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥
ईश्वर के अलावा आपकी मदद करने वाला कोई नहीं है।

कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥
किसी की माँ, पिता, बेटा तथा पत्नी कौन है? (जब शारीरिक संबंध समाप्त हो जाता है, तब) कौन किसी का भाई बन जाता है? (कोई नहीं) ॥१॥ विराम॥

धनु धरनी अरु स्मपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
यह धन, सम्पूर्ण पृथ्वी तथा माया है, जिसे अपने ही मान रहा है,

तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥
जब शरीर शरीर से अलग हो जाता है, तो उसके साथ कोई तथा चीज नहीं चलती। फिर शरीर उनसे क्यों जुड़ा रहता है? ॥१॥

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥
जो भगवान दीन-दुखियों पर दया करने वाले हैं, जो सदैव प्राणियों के दुःखों का नाश करने वाले हैं, उन पर तुम अपना प्रेम नहीं बढ़ाते।

नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥
नानक कहते हैं कि जैसे रात्रि का स्वप्न क्षणभंगुर है, वैसे ही सारा संसार नाशवान है ॥२॥१॥

सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥
हे मन, तू माया में क्यों आसक्त रहता है?

या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥
(देखो) इस संसार में कोई भी व्यक्ति (हमेशा) नहीं रह सकता। कई लोग जन्म लेते रहते हैं, कई लोग मरते रहते हैं ॥१॥ विराम॥

कां को तनु धनु स्मपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥
हे मन! (देख) न तो किसी का शरीर सदा रहता है, न धन, न माया। तूने किससे प्रेम किया है?

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥
जैसे बादलों की छाया क्षणभंगुर होती है, वैसे ही जो कुछ दिखाई देता है वह भी क्षणभंगुर है ॥१॥

तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥
(हे मन!) अहंकार को त्यागकर संतों की शरण में आ जा। (इस प्रकार) तू क्षण भर में (माया के बंधनों से) मुक्त हो जाएगा।

जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥
हे दास नानक! प्रभु के भजन के बिना स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता ॥२॥२॥

सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥
मैं नहीं जानता कि लोग अपना जीवन व्यर्थ क्यों बर्बाद करते हैं।

माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥
वह माया के भोगों में, माया के स्वाद में ही उलझा रहता है तथा भगवान की शरण नहीं लेता ॥१॥ विराम॥

इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥
यह सारा संसार स्वप्नवत है। यह देखकर भी पता नहीं क्यों मनुष्य लोभ में फंस जाता है।

जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥
यहाँ जन्म लेने वाला हर व्यक्ति नष्ट हो जाता है। यहाँ कोई भी व्यक्ति हमेशा के लिए नहीं रह सकता ॥१॥

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥
यह शरीर नाशवान है, परन्तु मनुष्य इसे सदैव रहने वाला मानकर अपने को (आसक्ति के जाल में) फंसाये रहता है।

जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥
हे दास नानक! वह मनुष्य आसक्ति के बंधनों से मुक्त रहता है, जो अपना मन भगवान के भजन में लगाता है ॥२॥३॥

सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥
हे प्रभु, मैंने कभी भी पूरे मन से आपकी स्तुति नहीं की है।

Page 1232

बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥१॥ रहाउ ॥
मैं दिन-रात मोह में ही डूबा रहा, तथा जो मुझे अच्छा लगता था, वही करता रहा। १. विराम॥

गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥
(हे प्रभु!) मैंने कभी भी गुरु की बात अपने कानों से नहीं सुनी, मेरे मन में सदैव परस्त्री के प्रति वासना रही है।

पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥१॥
वह दूसरों की निंदा करने के लिए बहुत भागता रहता था। समझाने पर भी कभी नहीं समझ पाया (कि यह कृत्य बुरा था) ॥१॥

कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥
मैं अपने कर्मों का वर्णन कैसे करूँ, कैसे मैंने अपना जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर दिया?

कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥
नानक कहते हैं, हे प्रभु! सारे दोष मेरे भीतर हैं। मुझे अपनी शरण में रखिये! ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

Page 1352

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व' है, जो जगत का रचयिता है, जो सर्वव्यापी है, भय से रहित है, शत्रुता से रहित है, जिसका स्वरूप काल से परे है (अर्थात जिसका शरीर अविनाशी है), जो योनियों में नहीं आता, जिसका प्रकाश स्वयंभू है तथा जो सच्चे गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

रागु जैजावंती महला ९ ॥
राग जैजावंती में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
भगवान का नाम याद करो, भगवान का नाम याद करो! यही (स्मरण) तुम्हारे काम आएगा।

माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
माया की आसक्ति त्याग दो तथा भगवान की शरण में जाओ।

जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥
संसार के सुखों को क्षणभंगुर समझो! यह सारा संसार तुम्हें छोड़कर जाने वाला है ॥१॥ विराम॥

सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥
इस धन को स्वप्न में मिली हुई वस्तु समझो! तुम्हें किस बात पर गर्व है?

बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥
(सम्पूर्ण) पृथ्वी का राज्य रेत की दीवार के समान है ॥१॥

नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥
सेवक नानक आपसे कहते हैं कि आपका (यह नियत) शरीर भी नष्ट हो जाएगा।

छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥
(देखो!) जैसे तुम्हारे जीवन का) कल का दिन कुछ ही क्षणों में बीत गया, वैसे ही आज (तुम्हारे जीवन का) दिन भी बीत रहा है ॥२॥१॥

जैजावंती महला ९ ॥
राग जैजावंती में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥
भगवान का नाम जपो, भगवान का नाम जपो! मानव जीवन बीत रहा है।

कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥
हे मूरख! मैं तुझसे बार-बार क्या कहूँ? तू समझता क्यों नहीं?

बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ ॥
(यह) तुम्हारा शरीर ओलों के समान है। इसके नष्ट होने में देर नहीं लगती ॥१॥ विराम॥

सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥
सभी विकर्षणों को त्याग दो, भगवान का नाम जपो।

अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥
अंतिम क्षणों में केवल यही नाम तुम्हारा साथ देगा ॥१॥

बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥
माया को विष की तरह भूल जाओ! अपने हृदय में भगवान की महिमा रखो!

नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥
सेवक नानक आपसे ऊंचे से कह रहे हैं, "मानव जीवन का समय बीत रहा है" ॥२॥२॥

जैजावंती महला ९ ॥
राग जैजावंती में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥
हे मन! सोच तेरी क्या दशा होगी?

इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥
इस संसार में (तुम्हारा कर्म साथी) भगवान का नाम है, जिसे (नाम को) तुमने कभी ध्यानपूर्वक नहीं सुना।

बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥
अपनी ही इच्छाओं में बहुत उलझे रहते हो, तुम उनसे अपना ध्यान कभी हटाते ही नहीं ॥१॥ विराम॥

मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥
तुम्हें मानव जन्म तो मिल गया, परंतु तुमने कभी एक क्षण के लिए भी भगवान का ध्यान नहीं किया।

दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥
तू सदैव स्त्री के भोगों के अधीन रहता है तथा तेरे पैरों में (स्त्री के स्नेह की) बेड़ियाँ रहती हैं ॥१॥

नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥
सेवक नानक आपको पुकारते हुए कहते हैं कि यह संसार स्वप्न के समान है।

सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥
तुम उस प्रभु का ध्यान क्यों नहीं करते, जिनकी यह माया दासी है? ॥२॥३॥

जैजावंती महला ९ ॥
राग जैजावंती में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥
जिंदगी व्यर्थ ही गुजर रही है, गुजर रही है।

निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥
अरे मूर्ख! दिन-रात पुराणों को सुनकर भी तू नहीं समझता।

कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ ॥
मृत्यु का समय आ गया है। (बताओ, इससे भागकर कहां जाओगे? ॥१॥ विराम॥

Page 1353

असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
जिस शरीर को तुमने शाश्वत समझा है, वह अवश्य ही राख हो जायेगा।

किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥
हे मूर्ख! हे निर्लज्ज! तू भगवान का नाम क्यों नहीं जपता? ॥१॥

राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥
अपने मन का अहंकार त्यागो तथा अपने हृदय में भगवान की भक्ति स्थापित करो!

नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥
सेवक नानक तुमसे बार-बार यही कहते हैं: ऐसा पुण्यमय जीवन जियो! ॥२॥४॥

Page 1426

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है तथा वह सतगुरु की कृपा से मिलता है।

सलोक महला ९ ॥
श्री गुरु तेग बहादुर जी के श्लोक।

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
यदि आपने कभी भगवान की स्तुति नहीं की है, तो आपने अपना मानव जीवन व्यर्थ कर दिया है।

कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥
नानक कहते हैं, हे मन! तू ईश्वर की स्तुति कर (तथा उसे अपने जीवन का आधार बना) जैसे मछली जल को (अपने जीवन का आधार बना लेती है) ॥१॥

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥
तुम क्यों इच्छाओं में इतने डूबे हुए हो? तुम एक पल के लिए भी अपनी इच्छाओं से अपना मन नहीं हटाते।

कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥
नानक कहते हैं, हे मन! प्रभु के भजन गा! (भजन के आशीर्वाद से) संग्रह का फंदा (गर्दन पर) नहीं पड़ता ॥२॥

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥
(तुम्हारी) जवानी लापरवाही में बीत गई, (अब) बुढ़ापे ने तुम्हारे शरीर पर कब्ज़ा कर लिया है।

कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥
नानक कहते हैं, "हे मन! ईश्वर का गुणगान कर। जीवन बीत रहा है" ॥३॥

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥
(देखो, अब) तुम बूढ़े हो गये हो किन्तु तुम अभी भी यह नहीं समझते कि मृत्यु आ गयी है।

कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥
नानक कहते हैं, "हे मूर्ख! तू भगवान की भक्ति क्यों नहीं करता?" ॥४॥

धनु दारा स्मपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
(हे मनुष्य!) धन, स्त्री, समस्त सम्पत्ति को अपना मत समझो!

इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥
हे नानक! इस सत्य को समझ लो कि इनमें से एक भी तुम्हारा साथी नहीं बन सकता ॥५॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
प्रभु ही दुष्टों को बुराई से बचाते हैं, जो सारा भय दूर करते हैं, तथा जो स्वामी रहित के स्वामी हैं।

कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥
नानक कहते हैं कि उसे (प्रभु को) सदा अपने साथ रहने वाला समझना चाहिए ॥६॥

तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥
उस के साथ आप ने प्रेम नहीं किया जिस (प्रभु) ने तुझे शरीर तथा धन दिया है।

कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥
नानक कहते हैं - "हे मूर्ख! तू अब क्यों घबराकर इधर-उधर भटक रहा है?" (अर्थात् उस प्रभु का स्मरण न करके तू घबरा गया है।) ॥७॥

तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥
वह (ईश्वर) जिसने हमें शरीर, धन, संपत्ति, सुख तथा सुंदर घर दिए,

कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, तू उस ईश्वर का ध्यान क्यों नहीं करता?" ॥८॥

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥
भगवान सभी सुखों के दाता हैं, (उनके समान) दूसरा कोई नहीं है।

कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन! उसका नाम स्मरण करने से मनुष्य उच्च आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त कर लेता है" ॥९॥

Page 1427

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥
हे मित्र! तुम्हें उस भगवान की भक्ति करनी चाहिए, जिसका नाम स्मरण करने से उच्च आध्यात्मिक गति प्राप्त होती है।

कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, आयु सदैव घटती जा रही है (परमात्मा का स्मरण मत भूल)" ॥१०॥

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
हे चतुर मनुष्य! हे बुद्धिमान मनुष्य! तुम जानते हो कि तुम्हारा यह शरीर (ईश्वर ने) पाँच तत्वों से बनाया है।

जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥
हे नानक! (यह भी) निश्चय रखो कि तुम पुनः उन तत्वों में लीन हो जाओगे जिनसे (यह शरीर) बना है (फिर तुम इस शरीर की झूठी आसक्ति में क्यों फँसे हुए हो तथा परमात्मा की याद क्यों भूल गए हो? ॥११॥

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
संतों ने जोर देकर कहा है कि ईश्वर हर शरीर में निवास करता है।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥
नानक कहते हैं, "हे मन! यदि तू उसकी (परमेश्वर की) भक्ति करेगा, (पूजा के आशीर्वाद से) तू संसार सागर से पार हो जायेगा" ॥१२॥

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥
जिस मनुष्य को लोभ, मोह तथा अहंकार छू नहीं सकते (अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो सुख या दुःख के समय आध्यात्मिक जीवन से विचलित नहीं होता, जिस पर लोभ, मोह तथा अहंकार अपना प्रभाव नहीं डाल सकते),

कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, वह मनुष्य (शाब्दिक रूप से) ईश्वर का रूप है" ॥१३॥

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
जो पुरुष न तो प्रशंसा से विचलित होता है तथा न ही निंदा से, जिसके लिए सोना तथा लोहा एक समान हैं, (अर्थात जो लोभ में नहीं फँसा है),

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, यह जान कि वह आसक्ति से मुक्त हो गया है" ॥१४॥

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
जिस मनुष्य के हृदय में न तो खुशी रहती है तथा न ही दुख, जिसके लिए शत्रु तथा मित्र एक समान प्रतीत होते हैं,

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, यह निश्चय समझ कि वह माया से मुक्त हो गया है" ॥१५॥

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
वह व्यक्ति जो किसी को धमकी नहीं देता, तथा किसी की धमकी स्वीकार नहीं करता (धमकियों से नहीं डरता)

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुनो, उसे समझो जिसके पास आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान है" ॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥
जिसने सम्पूर्ण (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा, ईर्ष्या आदि वाली) माया को त्याग दिया है, (समझ ले कि) उसने सम्यक् वैराग्य रूप को ग्रहण कर लिया है।

कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, (समझ कि) उस मनुष्य के माथे पर (अच्छा) भाग्य (जागृत) है" ॥१७॥

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
जिसने माया की आसक्ति त्याग दी है, जो माया की वासना के सभी दोषों से मुक्त हो गया है,

कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥
नानक कहते हैं, "हे मन, सुन! उसके हृदय में ईश्वर निवास करता है" ॥१८॥

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥
जिस व्यक्ति ने सृष्टिकर्ता के साथ गहरा संबंध स्थापित करके अहंकार को (अपने भीतर से) त्याग दिया है,

कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥
नानक कहते हैं, “हे मन! इस सत्य को समझ ले कि वह मनुष्य मुक्त है” ॥१९॥

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
इस अशांत संसार में, भगवान का नाम सभी भय का नाश करने वाला तथा मिथ्या विश्वासों को दूर करने वाला है।

निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥
हे नानक! जो व्यक्ति दिन-रात भगवान का नाम जपता है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं ॥२०॥

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
अपनी जीभ से भगवान के गुणों का जप करो तथा अपने कानों से भगवान का नाम सुनो।

कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥
नानक कहते हैं, “हे मन! (जो लोग नाम जपते हैं) वे संचय की यम के अधीन नहीं होते” ॥२१॥

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
जो व्यक्ति माया से आसक्ति त्याग देता है, लोभ, मोह तथा अहंकार को दूर कर देता है,

कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥
नानक कहते हैं कि वह स्वयं भी (इस संसार-सागर से) पार हो जाता है तथा दूसरों को भी (दुष्कर्मों से) बचाता है ॥२२॥

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥
जैसे सोये हुए मनुष्य को स्वप्न आता है तथा उस स्वप्न में बहुत सी वस्तुएँ दिखाई देती हैं, वैसे ही इस संसार को समझो।

इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥
हे नानक! परमात्मा के नाम के बिना इनमें कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो सदा साथ दे ॥२३॥

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥
मनुष्य धन के लिए दिन-रात भटकता रहता है।

कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥
कोई एक अनोखा ही ऐसा होता है जिसका मन परमात्मा के स्मरण से भरा होता है ॥२४॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जिस प्रकार पानी का बुलबुला निरन्तर बनता तथा नष्ट होता रहता है,

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥
नानक कहते हैं, “हे मित्र! सुनो, भगवान ने संसार का खेल इसी प्रकार रचा है” ॥२५॥

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
परंतु माया के नशे में अंधा हुआ व्यक्ति कुछ भी नहीं सोचता।

कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥
नानक कहते हैं कि ईश्वर की भक्ति के बिना (ऐसा व्यक्ति) यम के जाल में फंसा रहता है ॥२६॥

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करना चाहता है तो उसे भगवान की शरण लेनी चाहिए।

कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥
नानक कहते हैं, "हे मन! सुन, यह मानव शरीर बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ है (इसे माया के कारण भटकने नहीं देना चाहिए)" ॥२७॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
मूर्ख, नासमझ लोग धन की खोज में भटकते रहते हैं।

कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥
नानक कहते हैं कि प्रभु के भजन के बिना (यह मनुष्य) जन्म व्यर्थ हो जाता है ॥२८॥

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥
जो व्यक्ति दिन-रात (हर समय) भगवान का नाम जपता है, उसे भगवान का रूप समझो।

Page 1428

हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥
हे नानक! यह सत्य मानो कि भगवान के भक्त तथा भगवान में कोई अंतर नहीं है ॥२९॥

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
जिसका मन सदैव माया के मोह में फंसा रहता है, जो भगवान के नाम को सदैव भूल जाता है।

कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥
नानक कहते हैं, "भगवान की स्तुति के बिना जीने का क्या फायदा है?" ॥३०॥

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
जो व्यक्ति माया के मोह से अंधा हो जाता है, वह भगवान के नाम का स्मरण नहीं करता।

कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥
नानक कहते हैं कि ईश्वर की स्तुति के बिना यम के फंदे गले में पड़े रहते हैं ॥३१॥

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
(दुनिया में) सुख के समय तो बहुत से लोग मित्र बन जाते हैं, परन्तु दुःख के समय कोई साथ देने वाला नहीं होता।

कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥
नानक कहते हैं, "हे मन! प्रभु का गुणगान करने से वे अन्तिम क्षण में भी (प्रभु) तेरे सहायक बन जाते हैं ॥३२॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥
(परमात्मा को याद करना भूलकर) जीवात्मा अनेक योनियों में भटकती रहती है, यम (मृत्यु) का भय कभी भी (भीतर से) नहीं जाता।

कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥
नानक कहते हैं, हे मन! तू प्रभु का गुणगान करता रह, (गुणगान के आशीर्वाद से) तू प्रभु के उस धाम को प्राप्त करेगा, जिसे कोई भय छू नहीं सकता ॥३३॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥
(हे भगवन!) मैंने अनेक प्रयत्न किए हैं, परन्तु (उन प्रयत्नों से) मन का अहंकार नहीं मिटता।

दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥
नानक का मन मिथ्या विश्वासों में आसक्त रहता है। हे प्रभु! (आप ही) इसकी रक्षा करो ॥३४॥

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
बचपन, जवानी तथा बुढ़ापा - ये (जीवन की) तीन अवस्थाएँ हैं जो मनुष्य पर आती हैं।

कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥
नानक कहते हैं, "लेकिन याद रखो कि ईश्वर की स्तुति के बिना ये सब अवस्थाएँ व्यर्थ हैं ॥३५॥

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥
(हे माया के मोह में अंधा हुआ मनुष्य!) तुझे जो करना चाहिए था, वह तूने नहीं किया। (जीवन भर) तू लालच के जाल में फंसा रहा।

नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥
हे नानक! (इस प्रकार) सारा जीवन बीत गया। अब क्यों रोते हो? (अब पछताने से क्या लाभ?) ॥३६॥

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥
माया के मोह में फंसा हुआ मन स्वयं इस मोह से बाहर नहीं आ सकता।

नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥
हे नानक! जैसे दीवार पर चित्रित मूर्ति की छवि उससे अलग नहीं होती, बल्कि उससे चिपकी रहती है ॥३७॥

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥
(माया के मोह में फँसकर) मनुष्य (हरि-नाम स्मरण की जगह) कुछ तथा चाहता है (परन्तु विधाता की इच्छा से) कुछ तथा ही हो जाता है।

चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥
हे नानाक! मनुष्य दूसरों को धोखा देने की सोचता है, तथा मृत्यु का फंदा उसके गले में पड़ जाता है ॥३८॥

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
(यद्यपि) सुख के लिए जीव अनेक प्रयत्न करता रहता है, तथा दुःख के लिए प्रयत्न नहीं करता (तब भी दुःख प्रभू की इच्छा के अनुसार ही आता है तथा सुख भी तभी प्राप्त होता है, जब प्रभु की इच्छा होती है)।

कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥
नानक कहते हैं, हे मन! जो भगवान को अच्छा लगता है, वही होता है ॥३९॥

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
संसार भिखारी बना फिरता है (यह याद नहीं रखता कि) भगवान स्वयं ही सब प्राणियों को दान देने वाले हैं।

कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥
नानक कहते हैं, हे मन! उस दाता का स्मरण करता रह, तेरे सभी कार्य सफल होते रहेंगे ॥४०॥

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
(मैं नहीं जानता कि) मनुष्य नाशवान संसार का आदर क्यों करता रहता है।) संसार को स्वप्न जैसा समझो!

इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥
मैं नानक तुमसे ठीक कह रहा हूँ कि इन (दृश्यमान वस्तुओं) में कोई भी पदार्थ तुम्हारा (सच्चा साथी) नहीं है ॥४१॥

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥
हे मित्र! जिस शरीर का (मनुष्य) सदैव घमंड करता रहता है (कि यह मेरा अपना है), वह शरीर क्षणभर में नष्ट हो जाता है। (अन्य पदार्थों में आसक्ति तो छोड़ो, अपने इस शरीर में भी आसक्ति झूठी है।)

जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥
हे नानक! जो भगवान की महिमा करने लगता है, उसने संसार (के मोह) को जीत लिया है ॥४२॥

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥
जिस मनुष्य के हृदय में भगवान का स्मरण रहता है, वह मनुष्य (आसक्ति के जाल से) बचा हुआ समझो!

तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥
हे नानक! इस सत्य पर विश्वास करो कि ऐसे मनुष्य तथा ईश्वर में कोई अंतर नहीं है ॥४३॥

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥
जिस व्यक्ति के हृदय में भगवान के प्रति भक्ति नहीं है,

जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥
हे नानक! इसका शरीर सूअर या कुत्ते के समान समझो! ॥४४॥

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥
जिस प्रकार कुत्ता अपने मालिक के घर (दरवाजे) को हमेशा पकड़े रखता है तथा कभी उसे छोड़कर नहीं जाता,

नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥
हे नानक! इस प्रकार मन लगाकर पूरे ध्यान से प्रभु की भक्ति करो (ताकि उनका द्वार कभी न छूटे) ॥४५॥

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
(भगवान की पूजा छोड़कर मनुष्य) तीर्थ, स्नान, व्रत तथा दान करके मन में अभिमान कर लेता है (कि मैं धर्मात्मा हो गया हूँ)।

नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥
(परन्तु) हे नानक! यह सब (कार्य) हाथी का स्नान जैसे (व्यर्थ) हैं। (नोट: स्नान करने के बाद हाथी अपने ऊपर धूल लगाता है) ॥४६॥

सिरु क्मपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥
(जब बुढ़ापा आता है तो मनुष्य का) सिर काँपने लगता है, (चलते समय) पैर काँपने लगते हैं, आँखों की रोशनी कम हो जाती है,

कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥
नानक कहते हैं कि (बुढ़ापे में शरीर की) यह अवस्था हो जाती है कि भगवान के नाम के स्वाद में आनंद नहीं ले पाता (माया की आसक्ति प्रबल होने के कारण) ॥४७॥

Page 1429

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥
मैं दुनिया को अपना ही देखता आया हूँ (अब तक), (पर यहाँ) कोई किसी का नहीं (हमेशा के लिए)।

नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥
हे नानक! एकमात्र ऐसी चीज़ जो हमेशा के लिए टिकने वाली है, वह है भगवान की भक्ति। इस भक्ति को अपने मन में बनाए रखो ॥४८॥

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
हे मित्र! इस सत्य को जानो कि संसार की सम्पूर्ण सृष्टि नाशवान है।

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥
नानक कहते हैं कि (संसार में) रेत की दीवार के समान कुछ भी स्थायी नहीं है ॥४९॥

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
(देखो! प्रभु) राम (-चन्द्र) चले गए हैं, रावण भी चला गया है, जिसका बड़ा परिवार बताया जाता है।

कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥
नानक कहते हैं कि कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। (यह) संसार स्वप्न के समान है ॥५०॥

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
(मृत्यु आदि के बारे में) उसकी तब चिंता करनी चाहिए जो कभी होने वाली नहीं।

इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥
हे नानक! संसार की रीति यही है कि कोई भी प्राणी सदा नहीं रह सकता ॥५१॥

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
(इस संसार में) जो भी जन्म लेता है, उसका नाश अवश्य होता है; (प्रत्येक व्यक्ति) आज या कल यहाँ से चला जायेगा।

नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥
हे नानक! (इसलिए माया के सब बंधनों को त्याग दो) तथा भगवान का गुणगान करो! ॥५२॥

दोहरा ॥
दोहरा।

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
मेरी शक्ति समाप्त हो गई है, तथा मैं बंधन में हूं; मैं कुछ भी नहीं कर सकता (भगवान के नाम से विमुख हो जाने से कर माया के मोह के फंदे आ पड़ते हैं, तथा व्यक्ति के अंदर की आध्यात्मिक शक्ति लुप्त हो जाती है)।

कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥
नानक कहते हैं, हे प्रभु! ऐसे समय में (अब) आप ही एकमात्र सहारा हैं। (जैसे आपने तंदुए से छुटकारा पाने कि लिये) गज-हाथी की सहायता की थी, वैसे ही आप भी उसकी सहायता करें। (अर्थात भगवान के द्वार पर प्रार्थना करना ही माया के बंधनों से मुक्ति पाने का एकमात्र साधन है) ॥५३॥

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
(जब कोई व्यक्ति भगवान के द्वार पर गिरता है, तो उसके भीतर माया का विरोध करने के लिए) आध्यात्मिक शक्ति पैदा होती है तो (माया के मोह के) बंधन टूट जाते हैं तथा (आसक्ति का विरोध करने के लिए) हर चाल सफल हो सकती है।

नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥
नानक कहते हैं (हे प्रभु!) सब कुछ आपके हाथ में है (यहाँ तक कि आपकी बनाई हुई माया भी आपके वश में है, उससे बचने के लिए) आप ही सहायता कर सकते हैं ॥५४॥

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
(जब अंत में) सभी साथी वा आत्मीय एक दूसरे को छोड़ देते हैं, जब कोई भी साथ नहीं दे सकता।

कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥
नानक कहते हैं कि उस संकट (अकेलेपन) के समय में भी केवल भगवान ही सहारा देने वाला स्रोत है (इसलिए, हमेशा भगवान का नाम याद रखें) ॥५५॥

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
(अंत के समय में भी) भगवान का नाम (आत्मा के साथ) रहता है, गुरु (वाणी के रूप में) उसके साथ रहता है, शाश्वत भगवान उसके साथ हैं,

कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥
नानक कहते हैं कि जिसने इस संसार में गुरु की शिक्षा को धारण करके प्रभु के नाम का जप किया है (उसके अंत में ये सहायक होता है) ॥५६॥

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
हे प्रभु! जिस मनुष्य ने अपने हृदय में आपका नाम बसा लिया है, उसका कोई सानी नहीं है।

जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥
जिस (प्रभु) का स्मरण करने से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं तथा उस (प्रभु) का दर्शन भी हो जाता है ॥५७॥१॥